Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

डॉ० लज्जा भट्ट

संस्कृत विभाग , डी० एस० बी० परिसर

कु० वि० वि० नैनीताल , (उत्तराखण्ड)

वेदों में पर्यावण विज्ञान

वेद सभी विद्याओं के मूल स्रोत हैं। अतः वेदों को ज्ञान का आकर ग्रन्थ मानना चाहिए। आजकल वेद में विज्ञान का अन्वेषण करने की होड़ में अनुसन्धाताओं का ध्यान वेद को आधुनिक विज्ञान से प्रमाणित करने में लगा हुआ है। 'विज्ञान' शब्द का अर्थ आधुनिक भाषा के अनुसार उस विशिष्ट ज्ञान के एक निश्चित सिद्धांत से किया गया है, जिसे अंग्रेजी में 'साइंस' (scince) नाम दिया गया है। 'अमरकोष' में इसका अर्थ इस प्रकार प्रतिपादित किया गया है-

मोक्षेधीर्जानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

अर्थात् मोक्ष से सम्बंधित जो विचार किया जाय उस ज्ञान, शिल्प एवं शास्त्र के विषय वाली बुद्धि को 'विज्ञान' कहते हैं। पर्यावरण शब्द अंग्रेजी के एक शब्द environment का हिन्दी पर्यायवाची शब्द है। संस्कृत में पर्यावरण शब्द परि, आङ् उपसर्गपूर्वक वृञ् (वृ) वरणे धातु से ल्युट् प्रत्यय होने पर बनता है। परि (चारों ओर) आवरण (घेरा) पर्यावरण। भाव यह हुआ कि चारों ओर से किसी को ढकना अथवा घेरना ही पर्यावरण है। जीवधारी के चारों का वातावरण जो उसके अस्तित्व की रक्षा करने में सहायक होता है, वही पर्यावरण के नाम से व्यवहत होता है। मनुष्य के आस-पास होने वाले उसके अस्तित्व की रक्षा में सहायक तत्व उसके चारों ओर का वातावरण उसका पर्यावरण है, मनुष्य तथा पशु-पक्षियों का निवास स्थान पृथिवी पर होता है। उन्हें जीने की शक्ति पेड़-पौधों से ही मिलती है। सूर्य से ऊर्जा प्राप्त होती है, बादल से पानी मिलता है, वायु जीवन प्रदान करती है। इस प्रकार ये सम्पूर्ण तत्व मानव जीवन के आधार हैं

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

तथा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति इन्हीं के माध्यम से करता है। इसी सन्दर्भ को व्यापक अर्थ की दृष्टि से विचार करें तो हम यह कह सकते हैं कि हमारे चारों तरफ ही नहीं अपितु स्थावर-जंगम आदि के अलावा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चारों और से आच्छादित करने वाला पदार्थ या तत्वसमूह पर्यावरण है। विज्ञान की दृष्टि में पर्यावरण से सम्बंधित अर्थात् चराचर जगत के वातावरण के सम्यग् अध्ययन को पारिस्थितिकी (Ecology) कहते हैं।

आधुनिक विज्ञान तथा टेक्नॉलोजी के विस्मयकारी अन्वेषण तथा आविष्कार मनुष्य के परिवेश को सम्पूर्णता से परिवर्तित कर रहे हैं। इन परिवर्तनों का मूल्य प्राकृतिक संसाधनों का त्वरितक्षरण तथा पर्यावरण का भयंकर प्रदूषण है। मानव गतिविधियों के परिणामस्वरुप प्रतिदिन किसी न किसी रूप में कोई न कोई पर्यावरण को प्रदूषित करने का स्रोत खुल जाता है। प्रकृति तथा पर्यावरण दोनों एक-दूसरे के आधाराधेय रूप हैं। यह दृश्यमान जगत् ही प्रकृति है तथा प्रकृति का सम्पूर्ण स्वरुप ही पर्यावरण कहलाता है। वैदिक संस्कृति ने प्रकृति रूपी पर्यावरण को व्यवस्थित संचालन हेतु एक मर्यादित जीवन शैली दी है, जिस पर चलकर मानव एक सम्पूर्ण मानव बनकर अपने परम लक्ष्य तक पहुँच जाता है। पञ्चभूतों (पृथिवी, जल, अग्नि, आकाश, वायु) की निर्मलता, शुद्धता, पावनता, पवित्रता तथा प्रदूषण दूर करने की प्रेरणा वेदों में स्थान-स्थान पर दी गई है। ऋग्वेद में अमृत रूपी रस औषधि युक्त जलों से शिल्प तथा वैद्यक शास्त्र की की विद्या से उनके गुणों को जानकर कार्य की सिद्धि तथा सब रोगों की निवृत्ति नित्य करने के लिए आदेश दिया गया है-

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुतः प्रशस्तये।

देवा भवत वाजिनः ।।[1]

अथर्ववेद में कहा गया है कि व्यापक शक्तियों वाली जलधाराएँ हिमवाले पर्वत से निकलकर बहती रहती हैं। ये दिव्य गुणों वाली जलधाराएँ निश्चय करके हम लोगों के लिए औषधि के रूप

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

में वरदान सिद्ध हों तथा हम लोगों के शरीर अर्थात् दोनों नेत्र, दोनों एडियों तथा पाँव के दोनों पंजों के विकार को दूर करने में सहायक हों-

हिमवतः प्रसवन्ति सिन्धौ समह सङ्गमम।
आपो ह मध्यं तद्देवीर्ददन्ड्द्योत भेषजम् ।।
यन्मे अक्ष्योरादिद्योत पाष्ण्यर्थ्योः प्रपदोश्च यत्।
आपस्तत्सर्व निष्करन्भिषजां सुभिषक्तमाः ।।[2]

वैदिक पर्यावरण का विषय सृष्टि के मूलभूत पाँच तत्वों को 'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय' अनुकूल करने के रहस्य को व्याख्यायित करता है। वैदिक ऋषि प्रकृति के प्रति जागरूक था, वह सभी जीवों तथा पदार्थों को प्रकृति का नैसर्गिक अंग समझता था। उसके संरक्षण को अपना नैतिक कर्तव्य मानता था। वैदिक वाडमय में जीवन को जीने की कला इस प्रकार समझायी गयी है, जिससे प्रकृति में साम्यावस्था बनी रहे तथा मानव भी उस प्रकृति के प्रति कृतज्ञ भाव से रहने के लिए सचेष्ट रहे। इन्हें विकृत तथा प्रदूषित न होने दे, इसका संतुलन बनाए रखें। यजुर्वेद में इस प्रकार के भाव दृष्टव्य है-

"द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिविश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।[3]

उक्त मन्त्र में प्रकृति के सभी अंगों की पूर्णता तथा साम्यावस्था की कामना की गयी है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में स्पष्ट है कि जिस प्रकार गर्भस्थ शिशु की रक्षा झिल्ली (जिसका वैदिक नाम 'उल्ब' है) करती है, उसी प्रकार पृथिवी रक्षा के लिए मोटी परत 'ओजोन की परत रक्षा करती है। इसीलिए हमें अन्तरिक्ष को भी स्वच्छ तथा प्रदूषण रहित रखना चाहिए-

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

आपो वत्सं जनयन्तीर्गर्भमये समैरयन्।

तस्योत जायमानस्योल्ब आसीद्धिरण्ययः ।

कस्मै देवाय हविषा विधेम।।[4]

यजुर्वेद के रुद्राध्याय में वन, वृक्ष, वनस्पतियों, अरण्यों के लिए आदर, उनको समृद्ध करने तथा उनका उपयोग लेने और शान्ति प्राप्ति आदि का संकेत मिलता है। रुद्र के कल्याणकारी रूप को शिव कहते हैं तथा विनाशकारी अर्थात् रौद्र रूप को रूद्र कहा जाता है। पर्यावरण का प्रत्येक तत्व जब प्रदूषण रहित और संतुलित होता है तब वह शिव है, अन्यथा प्रदूषित होकर वह रौद्ररूप धारण कर लेता है-

वनानां पतये नमः। वृक्षानां पतये नमः।

औषधीनां पतये नमः।[5]

इसी प्रकार अनेक मन्त्रों में वृक्षों, औषधियों तथा वनों को रुद्र कहा गया है। रुद्र को विषपान करने वाला शिवतत्व अमृतदाता कहा जाता है। अतः वृक्ष रूद्र भी है क्योंकि ये वायुमण्डलीय विष (कार्बनडाई आक्साइड) का पान करते हैं। वृक्ष रूद्र हैं तो वृक्षारोपण को रुद्र की सेवा कहा जा सकता है।

पर्यावरण की रक्षा हेतु वनस्पति तथा वृक्षारोपण को आवश्यक मानते हुए ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है-

वनस्पतिं वन आस्थापयध्वम् ।[6]

पर्यावरण शुद्धि के लिए वनस्पति उगाना, अग्निहोत्र करना, विद्युत्, अग्नि, सूर्य, औषधियों का उपयोग वेदों ने ही बताये हैं। वनस्पतियों द्वारा वायुशोधन होता है। वायु प्रदूषण के बचाव हेतु

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

वनस्पति आरोपण अति आवश्यक है। यदि वनस्पति को काटना भी हो तो ऐसे काटें कि उसमें सैकडों स्थानों पर फिर से अंकुर फूट आएं-

अयं हित्वा स्वधितिस्ततिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय।
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा विवयं रुहेम।।[7]

यजुर्वेद में पृथिवी तत्व तथा यज, कृषि तथा विभिन्न खनिज पदार्थों की परिचर्चा, औषधियाँ द्वारा रोग निवारण की कामना, पृथिवी प्रदूषण की चेतावनी, वृक्षों, वनस्पतियों, औषधियों में चेतनत्वभाव आदि का विशद् वर्णन किया गया है। यहाँ यह स्पष्ट सन्देश मिलता है कि 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' अर्थात् त्याग पूर्वक जीवन जीयें, इसी में ऐहिक सुख तथा पारमार्थिक आनन्द है।

Chlorophyll की चर्चा करते हुए अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि अवितत्व (रक्षक तत्व) के कारण वृक्षों में हरियाली रहती है। मन्त्र में Chlorophyll को 'अवि' शब्द कहा गया है। यह रक्षार्थक 'अव' धातु से बना है, इसका अर्थ है रक्षक तत्व। मन्त्र में कहा गया है कि यह अवितत्व ऋतु (Tissucs) से घिरा है। इसके कारण वृक्ष, वनस्पतियाँ हरी रहती हैं-

अविर्वे नम देवता-कृते नास्ते परीवृता।
तस्या रूपेणे में वृक्षा हरिता हरितसन्ज।।[8]

वृक्षों की उपयोगिता बताते हुए ऋग्वेद में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते हैं, अतः इन्हें मत काटो-

मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि।
हि नीनशः ।।[9]

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

वेदों में पर्यावरण सुरक्षार्थ इस बात पर बल दिया गया है कि नियमानुसार कार्य करती प्रकृति के समान यदि मनुष्य भी नियमित अनुशासन में कार्य करे अर्थात् पर्यावरण के नैसर्गिक चक्र को न तोड़ते हुए उसके अनुकूल रहते काम करे तब प्रकृति संरक्षण के साथ प्राकृतिक नियमानुसार किये गये कार्य भी कल्याणकारी तथा शान्तिप्रद होंगे।

वर्तमान समय में विश्वस्तरीय समस्या बने पर्यावरण संकट के समाधानार्थ आज के बुद्धिजीवी मनुष्य को स्वयं के भौतिक सुख हेतु संरक्षक प्रकृति का भक्षक न होकर रक्षक के रूप में प्राकृतिक संसाधनों को दोहन न करके वेद वर्णित पर्यावरण संरक्षण विषयक सुझावों को अपनाते हुए पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक होना चाहिए, पर्यावरण की रक्षा में ही प्राणिमात्र की सुरक्षा है, अतः अथर्ववेद में कहा गया है-

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः।
प्रायन्तां विश्वाभूतानि यथायमरण असत्।।[10]

अर्थात् इन्द्रियों इस प्राणी की रक्षा करें, वायु के प्रवाह रक्षा करें तथा सब भूत (पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश) रक्षा करें जिससे यह प्राणी दोषरहित होकर स्वस्थ रूप में जीवन व व्यतीत कर सके।

जीवन को सुखमय बनाने के लिए शुद्ध पर्यावरण की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा तथा शुद्धि के उपाय ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' में निहित हैं। वर्तमान परिवेश में पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति हेतु वैदिक संहिताओं की शिक्षा पर बल देना होगा, क्योंकि वेद अथाह जान की राशि हैं। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति घटकों में देवत्व की अवधारण विकसित की है, क्योंकि ये देव तत्व मनुष्य के कल्याण के लिए हैं। जड़ दिखाई देने वाली वनस्पति मानव जाति के कल्याण के लिए है। उनकी पूजा का महत्त्व इसीलिए है। इसी देवत्व की भावना को विकसित करना तथा अपने मनोगत

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

पर्यावरण की दूषित भावना को बदलना होगा। वेदों में इन्हीं भावों को सूक्ष्म दृष्टि से यजों के माध्यम से बतलाया गया है, क्योंकि यज्ञ प्रकृति का पारिस्थितिकी चक्र (इकोलॉजिकल साइकिल) है। इसी से ही प्रकृति तथा पर्यावरण अपनी साम्यावस्था बनाए रखने में समर्थ होंगे।

सहायक सन्दर्भ-

1-ऋग्वेद 1/23/19

2-अथर्ववेद 6/24/1-2

3-यजुर्वेद 36/17

4-अथर्ववेद 4/2/8

5-यजुर्वेद 16/18-19

6-ऋग्वेद 10/101/11

7-यजुर्वेद 5/43

8-अथर्ववेद 10/8/31

9-ऋग्वेद 6/48/17

10-अथर्ववेद 4/13/4

डॉ० लज्जा भट्ट
संस्कृत विभाग
डी० एस० बी० परिसर
कु० वि० वि० नैनीताल
(उत्तराखण्ड)